शोध मंथन Vol. XI No.II Apr.-June. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

गाँधी का समाज दर्शन और कोरोना संकट

महेन्द्र सिंह
सहआचार्य दर्शनशास्त्र विभाग,
गौरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय, अलवर (राज0)
Email: mahendra.arya20@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में वर्तमान में कोरोना महामारी के कारण सम्पूर्ण विश्व प्रभावित हो रहा है। समस्त विकास की पराकाष्ठा इस महामारी के आगे नतमस्तक हो चली है। ऐसे विकट समय में समग्र विश्व को गाँधी चिन्तन से अवगत कराना है तथा इस संकट की घड़ी का वह कैसे सामना करें, जगत् को गाँधी चिन्तन के द्वारा आशा का मार्ग दिखाना है। हमने प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ा है, जल, जंगल, जन व जमीन के परस्पर अनुपात को तोड़ा है जिसके कारण समय समय पर ऐसे संकट आते रहेंगे किन्तु क्या गाँधी चिन्तन इस संकट की घड़ी में क्या कोई मार्ग दिखाता है, उसी परिप्रेक्ष्य में गाँधी के सिद्धान्तों द्वारा उक्त कोरोना सकंट से निपटने का आशान्वित मार्ग दर्शन हम निकालने का प्रयास करेंगे। गाँधी आज भी अपने प्रयोगों व अनुभवों से प्रासगिंक सिद्ध होते नजर आ रहे हैं। हमें फिर से गाँधी जीवन पद्धति को अपनाना होगा।

गाँधी चिन्तन भी अपने आप में व्यापक और विषद है। गाँधी ने समाज का शायद ही ऐसा कोई विषय हो जिस पर उन्होने अपना अनुभव साझा ना किया हो। गाँधी सदैव से ही पर्यावरण प्रेमी थे और वे प्रकृति के निकट रहने को ज्यादा पसंद करते थे। उनके अनुसार प्रकृति से दूर जाने का मतलब है भौतिकवाद को गले लगाना। वे सदैव ही औधोगिकरण की अतिशयता के खिलाफ थे। उनका कहना था की उधोगीकरण पर आवश्यकता से अधिक बल देना समाज के नैतिक विकास के मार्ग में रूकावट पैदा करना है तथा इस प्रकार के प्रयासों के फलस्वरूप समाज में अनेक प्रकार के सामाजिक तथा राजनैतिक अशुभ उत्पन्न होते है। जब हम प्रकृति के साथ खिलवाड़ करते हैं तो पारिस्थितिकी असंतुलन उत्पन्न होने लगता है। वर्तमान का कोरोना संकट भी इसी असंतुलन का परिणाम है।

मुख्य शब्दः *कोरोना, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रहम्चर्य, कायिक श्रम, अभय, अस्वाद, अस्पृश्यता निवारण, स्वदेशी, सर्वधर्मसमभाव सर्वोदय, स्वच्छता, क्वेरनटाइन।*

प्रस्तावना

गाँधी कहते है कि समाज के लिए सर्वप्रमुख शर्त है, अपनी स्वार्थमूलक प्रवृत्तियों को त्यागना। समाज का निर्माण हिंसा से बचने के लिए ही हुआ है। गाँधी के अनुसार समाज–निर्माण

के मुख्य नैतिक आधार है – आत्म बलिदान की भावना तथा अहिंसा। अपने स्व हित (स्वार्थ) से ऊपर उठना तथा हिंसा का त्याग इन्हीं पर सामाजिक निर्माण निर्भर करता है। गाँधी ने अपने हर सिद्धांत में आध्यात्मिक आदर्श को स्वीकारा फिर भी वे व्यावहारिक चिन्तक है क्योंकि उन्होने सदैव अपने सिद्धान्तों को व्यवहार में अपनाया। उन्होनें राज्य तथा समाज की उत्पत्ति व स्थापना कब व कैसे हुई उसकी विवेचना की अपेक्षा इनकी वर्तमान स्थिति को अधिक महत्तव देते हैं। उनका लक्ष्य था कि किस प्रकार एक समाज व राज्य को सुधार कर उसे स्वस्थ व सुदृढ़ आधार दिया जा सके। इसी कारण उनके सामाजिक विचार तथ्यात्मक के साथ–साथ मूल्यात्मक अधिक है। वे सदैव एक आदर्श पर आधृत होते हैं। उनके मूल आदर्श तो सत्य व अहिंसा के मूल्य हैं तथा इन्हीं मूल आदर्शों के अनुरूप उनके सामाजिक एवं राजनैतिक विचार निर्मित होते हैं। गाँधी के अनुसार सामाजिक संस्था का आधार श्रम है। मार्क्स भी श्रम को महत्तव देते हैं किन्तु गाँधी श्रम के लिए श्रम का नहीं (कार्य) शब्द का प्रयोग करते हैं। जहाँ मार्क्स के समाज दर्शन में हिंसा व संघर्ष को स्वीकारा है किन्तु गाँधी चिन्तन में इनके लिए स्थान नगण्य है। वे अपने श्रम विचार को प्रेम तथा सहयोग पर विकसित करते हैं।

गाँधी का सर्वोदय विचार का अधार भी प्रेम ही है। प्रेम के कारण ही व्यक्ति परहित के लिए आत्म–बलिदान भी कर सकता है। गाँधी कहते हैं कि सर्वोदय तो सार्वभौम समरूपता की अनुभूति है जो इस जीवन में संभव नही है। किन्तु वे कहते हैं कि सर्वोदय तो आदर्श है उसकी अनुभूति भले ही न हो किन्तु वह सभी की प्रेरणा का आधार तो बन ही सकता है। नैतिक आध्यात्मिक जीवन का महत्व आदर्श को पा लेने में नहीं बल्कि उसे पाने के सतत प्रयत्न में है। गाँधी वसुधैव कुटुम्बकम् का आदर्श लेकर चलते हैं। इसी दृष्टिकोण से जगत् के समस्त जीव जन्तु, पशु–पक्षी सभी चेतना तत्व है, सभी आपस में मित्रभाव से रहें तो जगत शांतिमय बना रहता है किन्तु जैसे ही हम दूसरे जीवों को अपने से तुच्छ समझने लगते हैं वैसे ही मन में दूषित भाव उत्पन्न होते हैं जिससे हिंसा वृत्ति जन्म लेती है। सत्य और अहिंसा के मूल मन्त्रों से भटकाव ही हिंसा को बल देता है। गाँधी ने सदैव साधन–साध्य की बात कही उनके अनुसार अशुभ साधनों से शुभ साध्य की प्राप्ति नहीं की जा सकती और जब–जब हम अनैतिक (अशुभ) साधनों से कार्य करते है तो अशुभ की ओर अग्रसर होते चले जाते हैं। हर प्रकार के शुभ–अशुभ कर्मों से कुछ प्रवृत्तियां उत्पन्न होती, जिनसे कुछ संस्कार बनते हैं जिन्हें कर्मों के करने वाले को भुगतना पड़ता है इसे ही कर्म नियम कहा गया है। अर्थात् जैसा करेगें वैसा भरेगें। इसलिए वैसा ही कर्म करना चाहिये जिससे शुभ संस्कार ही उत्पन्न हो। इसके लिए सदगुणों को अपनाने पर बल दिया गया है जिनका पालन शुभ मार्ग के अनुशीलन में सहायक हो सकता है।

भारतीय नैतिक दर्शन में ऐसे पाँच सदगुणों की चर्चा की गई है– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह तथा ब्रहम्चर्य। गाँधी इन्हें पूर्णतः स्वीकार करते हुए इनमें कुछ और जोड़ देते हैं जिन्हें उन्होनें अपने अनुभव और प्रयोगों से स्वीकार किया और कहा कि जब जब हम इन नैतिक सदगुणों का उल्लंघन करते है तो विश्व को अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है कुछ संकट प्राकृतिक अशुभ के रूप में आते है तो कुछ नैतिक अशुभ के रूप में। महामारियाँ भी इन्हीं नैतिक

सदगुणों के उल्लंघन का परिणाम है। प्रकृति के बनाये नियमों का जब हम उल्लंघन करते हैं तो उसके कुप्रभावों का सामना भी करना पड़ता है उनसे हम बच नहीं सकते। गाँधी जी कहते हैं कि इन सद्‌गुणों के अनुशीलन का अर्थ इनका बाह्य रूप से पालन नहीं बल्कि इनका पालन मन, वचन, कर्म तीनों के स्तर पर होना चाहिए।

कोरोना महामारी जिसने सम्पूर्ण विश्व को जकड़ लिया है विश्व के बड़ें–बड़े शक्तिशाली राष्ट्र इसके कुप्रभाव को भुगत चुके हैं उनकी समस्त आर्थिक वृद्धि धरातल पर आ चुकी है, समस्त विकास आँखे खोलें कोरोना महामारी की विकरालता के आगे लाचार है। लाखों की संख्या में मानव जाति मृत्यु को प्राप्त हो चुकी है। अकेले अमेरिका में अप्रेल 2020 तक मृतकों का आंकड़ा पचास हजार को पार कर चुका है। ऐसे ही कोरोना का जन्म स्थान वुहान (चीन) जहाँ दिसम्बर 2019 में इस महामारी का प्रवेश हो चुका था आज तक पटरी पर नहीं लौट पाया है ऐसे ही कोरोना संकट के दुष्प्रभावों से ब्रिटेन स्पेन जैसे सुविकसित राष्ट्र भी बच नहीं पाये है। भारत चूंकि गाँधी, महावीर, बुद्ध जैसे अहिंसावादियों का राष्ट्र है अतः यहाँ इसका प्रभाव उतना नहीं पड़ा है। क्योंकि हम सदियों से प्रकृति सरंक्षण जल, जंगल, जमीन व जन के सरंक्षक रहे हैं तथा हमारे मन मस्तिष्क में कहीं ना कहीं गाँधी, महावीर के आदर्श हमें प्रकृति तथा सत्य व अहिंसा के मार्ग की याद दिलाते रहते है।

वुहान जो कोरोना की जन्म स्थली है वहाँ के लोगों द्वारा जीव हिंसा कर मांस भक्षण को माना गया है। यदि विश्व को कोरोना जैसी महामारियों से बचाना है तो हमें प्रकृति को अपनाना होगा इसको छोड़कर नहीं अपितु इसके साथ जीना होगा। तथा जगत् को गाँधी द्वारा बताये गये एकादश व्रतों को जीवन में लागू करना चाहिये, इनसे मन वचन कर्म में शुद्धता आती है और हम हिंसा से दूर रहते हैं। इन एकादश व्रतों में प्रथम पाँच अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, व ब्रहम्‌चर्य हैं जिन्हे महावीर स्वामी ने भी स्वीकार किया है। शेष अन्य व्रतो में अभय, कायिक श्रम, स्वदेशी, अस्वाद, अस्पृश्यता निवारण, सर्वधर्म समभाव, आदि है।

1. अहिंसा

गाँधी अहिंसा को प्रमुख सद्‌गुण मानते है तथा इसमें वे प्रेम तथा सहिष्णुता को भी स्वीकारते है। अहिंसा की मान्यता है कि सभी व्यक्ति मूलरूप से समान है अतः ईश्वरीय प्रेम के लिए आवश्यक है कि हम अपने आचरण में सबसे प्रेम करें। अतः हिंसा स्वीकार्य नहीं है। छोटे बडे सभी जीवों में ईश्वर का वास है अतः सभी को साथ ले कर चलें। वहीं चीन के वुहान में मानव ने पशु पक्षीयों की हिंसा कर उनका भक्षण कर डाला, सांप, छिपकली, चमगादड, कॉकरॉच इत्यादि जीवों से अपनी क्षुधा पूर्ति की जिससे कोरोना का वायरस मानव में आया। गाँधी की अहिंसा समस्त जीवों की हिंसा का पूर्णतः निषेध करती है तथा जीवन से प्रेम का संदेश देती है, इस प्रकार कोरोना महामारी का प्रमुख कारण अहिंसा सदगुण का त्याग है।

2. सत्य

गाँधी सत्य को ही ईश्वर कहते है। अतः सत्य भी प्रमुख सद्‌गुण है। बिना सत्य को जाने सत्य के प्रति निष्ठा कैसे जगा सकते है। गाँधी सत्य को स्वतः प्रकाश कहते हैं। यह अपने को

स्वतः व्यक्त करता है। हम सबसे ऐसे प्रेम कर लेते है कि सत्य को जान ही नहीं पाते छः ऐसे घातक शत्रु है जो हमारे मन में धृणा, दुर्भावना, ईर्ष्या, पर अहित जैसी भावनाओं को उत्पन्न कर देते है, ये शत्रु है काम, क्रोध, लालच, वासना, अंहकार, असत्य। सत्य ज्ञान के लिए हमें इन शत्रुओं के चंगुल से मुक्त होने का निरन्तर प्रयत्न करते रहना चाहिए। गाँधी कहते हैं कि सत्य भाषण कटु रूप में नही प्रिय रूप में करना चाहिये।

कोरोना संकट का सामना भी सत्य का पालन करके किया जा सकता है। हम उक्त रोग होने पर उसे सहज भाव में चिकित्सक को उसे व्यक्त कर दें जिससे इसके प्रसार पर रोक लग सके। रोग के लक्षणों को ईमानदारी से बताना चाहिये क्योंकि छुपाने से अधिक लोगों को हानि होगी जीवन पर भी संकट आ जाता है। चीन में भी उक्त बीमारी को कई दिनों तक छिपाया रखा जिससे समय रहते इसका उपचार नहीं खोजा जा सका। दूसरा हम उसके लक्षणों के बारे में कोई झूठी अफवाह को ना फैलाये लोगों को सही जानकारी दे। झूठे व अविश्वसनीय उपचारों से इस बीमारी की जटिलता को हम और ज्यादा बढ़ा देते हैं, अतः सत्य का पूर्ण पालन करना चाहिए। महाभारत में भी कहा गया है कि सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। और झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है।

3. अस्तेय

सामान्य प्रचलित अर्थ है चौर्यवृत्ति का निरसन, अर्थात् किसी की सम्पत्ति को बिना पूछे लेना या ग्रहण करना ऐसा नहीं करना अस्तेय है। दूसरा अर्थ है कि ऐसी हर वस्तु का त्याग जिसकी हमें आवश्यकता नहीं है, गाँधी इन दोनों अर्थ को मानते हैं। यहाँ गाँधी जैन दर्शन से प्रभावित है जहाँ चोरी को भी हिंसा समझा जाता है। अतः हम केवल उतना ही ग्रहण करें जितने की हमें जरूरत हो, तथा बिना अनुमति ग्रहण ना करें। कोरोना संकट के समय भी हमें इस सद्गुण का पालन करना चाहिये। इस संकट में जब समस्त उत्पादन इकाईयाँ बन्द पड़ी है, बिना श्रम उत्पादन ठप्प पड़ा है ऐसे में हम आवश्यक जरूरी सामान की जमाखोरी, कालाबाजारी नहीं करें अपितु जो वंचित है उस तक आवश्यक रसद पहुँचाकर मानव होने का परिचय दें।

5. ब्रहम्चर्य

यौन प्रवृत्ति से विमुखता ही ब्रहम्चर्य है किन्तु गाँधी इसका व्यापक अर्थ भी स्वीकारते है, वे कहते है कि यौन नियंत्रण ही पर्याप्त नहीं है अपितु ब्रहम्चर्य का अर्थ मन व इन्द्रियों का पूर्ण नियत्रंण है। अनैतिकता का जन्म ही इन्द्रिय तृप्ति की अधिकता के कारण होता है। गाँधी कहते है कि हमें अपने भोजन के तरीकों को भी नियंत्रित करना चाहिये क्योंकि ये सामान्यतः स्वाद पर आधारित होता है। स्वादिष्ट भोजन का लोभ हमें गरिष्ठ तामसी भोजन के लिए प्रेरित करता है इसलिए गाँधी ऐसे भोजन को ग्रहण करने पर बल देते हैं जो सतुंलित हो तथा इन्द्रियों को भी नियंत्रित रखे उन्हें भटकाये नहीं। इसी कारण गाँधी जीवन भर ऐसे भोजन के सेवन व खाद्य पदार्थों पर प्रयोग करते रहे जिससे वे ऐसे आहार की खोज कर सकें जो सतुंलित हो और स्वास्थयवर्धक भी हो तथा इन्द्रियों को भी नियंत्रित रखे। इस प्रकार ब्रहम्चर्य वह सदगुण है जिसमें इन्द्रियों को अनियंत्रित होने से रोकना हो। कोरोना महामारी भी स्वाद के कारण ही उत्पन्न

हुयी है स्वाद की पूर्ति के लिए जीवों की हिंसा की गई यदि मानव शाकाहार तक सीमित रहता तो ना तो उसमें तामसिक वृत्तियाँ जन्म लेती और ना ही वह मासांहार को ग्रहण करता जिससे उसे ऐसी लाइलाज बीमारी मिलती। महामारियों से बचाव के लिए जिह्वा पर नियंत्रण आवश्यक है, स्वास्थय को महत्तव दें स्वाद को नहीं।

4.अपरिग्रह

गाँधी के अनुसार जो हमारे पास है उसी में सन्तुष्ट रहने का अनुशासन ही सद्गुण है। वैसे गाँधी कहते है कि पूर्ण अपरिग्रह सम्भव नहीं है क्योंकि जीवन यापन के लिए कुछ वस्तुओं की आवश्यकता तो रहती ही है और उनके त्याग का अर्थ है जीवन समाप्ति। अपरिग्रह का पालन इसलिए अनिवार्य है क्योंकि इस सद्गुण के नहीं रहने पर हमारा लोभ–लालच वस्तु की प्राप्ति की इच्छा का कोई अन्त नहीं रह जाता है और यह इच्छा ही तो सभी सामाजिक बुराईयों की जड़ है। अतः न्यूनतम में सन्तुष्ट रहने का सद्गुण ही अपरिग्रह है। कोरोना महामारी का सामना करने के लिए हमें इसका पालन करना चाहिए इस संकट के समय में हम सरकारी राहत का कम से कम उपभोग करें ताकि सभी प्रभावितों तक राहत पहुँच सके।

हम केवल अपनी इच्छा पूर्ति तक ही सीमित ना रहे। स्वहित को त्यागकर जनहित की सोच रखें। हम एकजुट होकर न्यूनतम साधनों में रहते हुए रोग से लडे। क्योंकि सरकार की चिकित्सा संसाधन, हॉस्पिटल, डॉक्टर, औषधि आदि सभी सीमित है। ऐसे में अन्य रोगों को थोड़ा नियंत्रित रख कोरोना की चिकित्सा को प्राथमिकता दे जिससे इस दिशा में प्रभावी रोकथाम कर सके।

इन पाँच नैतिक नियमों के साथ गाँधी कुछ अन्य नैतिक नियमों को भी स्वीकारते हैं जो उनके एकादश व्रत में निहीत है।

6. अभय

गाँधी के अनुसार अहिंसा का पालन अभय में ही संभव है यह अहिंसा की अनिवार्य शर्त है, कायर व डरपोक अहिंसा का पालन कर ही नहीं सकता। गाँधी के अनुसार यह अभय सदगुण बड़ा व्यापक है इसके अन्तर्गत शारीरिक चोट, भूख, प्यास, दुर्वचन तथा मृत्यु के भय से ऊपर उठना भी शामिल है। यह नैतिक सदगुण है, कि हम मृत्यु के भय में भी अपने सत्य अहिंसा के मार्ग से डिगे नहीं। अतः विपरीत परिस्थितियों, हिंसा, आतंक, मृत्यु की स्थिति में भी अपने नैतिक सद्गुणों पर डटे रहना ही अभय है। कोरोना जैसी भयंकर महामारी का सामना भी अभय की सहायता से कर सकते है, क्योंकि यह बिमारी लाइलाज है अभी औषधी भी निश्चित नहीं है, ऐसे में रोगी यदि निडर रहकर उसका सावधानी पूर्वक सामना करता है तो उसकी जीत निश्चित है यदि वह बिमारी के बारे में जानकर भयभीत हो जाये तो उसका स्वस्थ होना असंभव है।

7. अस्वाद

इसी तरह गाँधी अस्वाद को भी स्वीकारते है उनके अनुसार स्वाद ही इन्द्रियों को भटकाता है हम अस्वाद को अपनाये जिससे अनावश्यक स्वाद प्राप्ति हेतु जीव हिंसा पर रोक लग सके। वुहान में कोरोना सकंट भी स्वाद का ही फल है। वहाँ के निवासी पशु–पक्षियों के

मांस को स्वाद के कारण खा रहे थे उसी स्वाद ने जीवन को संकट में डाल दिया।

8. कायिक श्रम

गाँधी शारीरिक श्रम की अनिवार्यता पर बल देते है सभी मनुष्यों को स्वंय के लिए उपयुक्त शारीरिक श्रम अवश्य करना चाहिये। उन्होने श्रम की समानता पर बल दिया। एक सफाई कर्मचारी तथा डाक्टर व शिक्षक का श्रम समान है तथा इसके लिए मेहनताना भी समान मिलना चाहिए जिससे कोई भी श्रम छोटा–बड़ा ना हो। निरन्तर योग्यानुकुल कायिक श्रम करते रहें तो छोटी–मोटी बीमारियाँ वैसे ही दूर रहती है, शरीर व प्रतिरक्षा तंत्र मजबूत बनता है व्यक्ति सोच समझकर खाता है तथा जो खाता है उसे पचाता है जिससे शरीर स्वस्थ रहता है।

9. स्वदेशी

स्वदेशी से देश आत्मनिर्भर बनता है तथा हर हाथ को रोजगार भी मिलता है। स्वदेशी को अपनाकर स्वयं व राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को मजबूत बना सकते हैं। स्वदेशी से राष्ट्र के कुटीर लधु उद्योगों को संरक्षण मिलता है। विदेशी को अपनाकर हर उसके साथ विदेशी सभ्यता संस्कृति आचार विचार जीवन पद्धति भी आयात कर लेते है जिसका हमारे जीवन व्यवहार पर पूरा प्रभाव पड़ता है।

10. अस्पृश्यता निवारण

गाँधी ने सदा से ही छुआछूत व भेदभाव का विरोध किया उन्होनें कहा कि प्रत्येक जीव में ईश्वर का वास है अतः व्यक्ति, व्यक्ति में भेदभाव नहीं होना चाहिए। वर्ण व्यवस्था समाज की व्यवस्था को बनाये रखने के लिए है उसे जाति का बल नही देना चाहिये। व्यक्ति अपने कर्म से ब्राहम्ण व शूद्र बनता है। अतः गाँधीजी ने हमेशा अस्पृश्यता का कड़ा विरोध किया उन्होने इसके विरोध में तो इतना तक कह दिया कि मेरा अगला जन्म एक शूद्र के घर में हो जिससे मैं उस संवेदना को महसूस कर सकूँ जो एक शूद्र को होती है।

कोरोना महामारी का संकट किसी जाति विशेष के व्यक्ति में नहीं आता इसकी नजर में सब प्रिय है हमें इस संकट में स्वयंसेवी के रूप में सफाई श्रमिको का आभार व्यक्त करना चाहिये जो अपनी जान की बाजी लगाकर समाज को स्वच्छ बनाये रखने का दायित्व निभा रहे हैं, इतनी निःस्वार्थ सेवा कोई नही कर सकता।

ऐसे ईश्वर भक्तों के साथ भेदभाव करना ईश्वर का अपमान करना है इस समय सेवा ही परम धर्म है।

11. सर्वधर्म समभाव

गाँधी ने हमेशा ही भारत विभाजन का विरोध किया उन्होने सदैव हिन्दु–मुस्लिम सम्प्रदायों की एकता के लिए कार्य किया। उन्होने कहा दोनों धर्म सदियों से साथ रहते आये हैं कभी मनमुटाव हो भी जाता है लेकिन दोनों एक साथ नहीं रह सकते यह मानना गलत होगा। देश की आजादी के लिए भी दोनों ने साथ मिलकर संगठित होकर कार्य किया है। उन्होनें सदैव ही सर्वधर्म समभाव की बात की तथा धार्मिक कट्टरता का विरोध किया।

कोरोना महामारी भी किसी धर्म को पंसद करके नहीं आती है यह जाति, धर्म नहीं देखती है ऐसे में इसका सामना करने के लिए सभी धर्मो को एक साथ मिलकर कार्य करना होगा। एक दूसरे का निःस्वार्थ भाव से सहयोग करे और इसके उदाहरण देखने को भी मिल रहे है। रूढीवाद व अंधविश्वास को त्यागकर संगठित व सजग होकर ही हम कोरोना संकट को मात दे सकते है।

गाँधी अपने चिन्तन में स्वच्छता को भी सर्वाधिक महत्तव देते हैं उन्होने आश्रम में रहते हुए अपनी दिनचर्या की शुरूआत सफाई करके ही करते थे। जब तक हम अपने घर गली मोहल्लों व स्वंय की स्वच्छता का ध्यान नहीं रखेगें तो हम स्वस्थ नहीं रह सकते और एक अच्छे राष्ट्र के लिए उसके नागरिकों का स्वस्थ होना ही सबसे बड़ी पूँजी है। तत्पश्चात् तप, स्वाध्याय, व्रत, उपवास व योग को अपने जीवन का हिस्सा बनाया जिससे मजबूत होकर वे इतने सारे आन्दोलनों का सफल संचालन कर पाये। इस कोरोना महामारी का भी सबसे सरल या जटिल उपाय केवल स्वच्छता ही है।

निष्कर्ष

आज जब सम्पूर्ण विश्व लॉकडाऊन के दौर से गुजर रहा है गाँधी ने तो बहुत पहले ही इस क्वार्नटाइन का बखूबी पालन कर लिया था। बात उन दिनों की है जब गाँधी जी पहली बार अपनी पत्नी व बच्चों के साथ मुंबई से दक्षिण अफ्रीका जा रहे थे। बंबई से पानी के जहाज में ये चले तो रास्ते में भंयकर तूफान का सामना करना पड़ा। इस तूफान की स्थिति में भी गाँधी सभी यात्रियों को किस्से कथायें सुनाकर उनकी हिम्मत बढ़ा रहे थे। 44 दिन की यात्रा के पश्चात् वे अफ्रीका पहूँचे। दक्षिण अफ्रीका के हिन्द महासागर के तट पर डरबन आने वाले भारतीयों से भरे हुए इस जहाज को रोक दिया और यात्रियों को भी उसी में रोक दिया गया। कारण था दो महीने पहले मुबंई में आया प्लेग था। चूंकि यह जहाज भी मुबंई से आया था अतः सभी यात्रियों को क्वार्नटाइन संबंधी कानून के तहत सरकार के नियत्रंण में रहना होगा। गाँधी को भी परिवार सहित सभी यात्रियों को जहाज में ही रूकना पड़ा। गाँधी इस समय में भी लोगों को परिस्थितियों से लड़ने की हिम्मत बधाँते रहे। सप्ताह उपरान्त उन्हें पता चला की यह अग्रेजों की साजिश थी, वे अफ्रीका में गाँधी के कदमों को रोकना चाहते थे। इसके लिए प्लेग संक्रमण से क्वार्नटाइन का बहाना बनाया गया। गाँधी ने भी उक्त बीमारी हेतु प्रतिबंध की आत्मा से पालना की। गाँधी जी के हर कदम के पीछे एक सकारात्मक सीख थी उन्होंने बताया कि मुश्किल वक्त को कैसे काटा जाये। धैर्य, साहस और उम्मीद सब ठीक कर देती है बस स्वयं पर भरोसा रखना चाहिये, चाहे क्वार्नटाइन कितना ही लम्बा क्यों ना हो। गाँधी ने तो पता नहीं कितनी बार एक जगह रहकर कइ दिनों के उपवास किये, अनशन किये, सत्याग्रह किये और गुलामी से मुक्ति दिलाई। कोरोना तो एक रोग है जिसके लिए हम स्वयं अपनी रक्षा के लिए कुछ दिन घर में नहीं रह सकते। गाँधी ने स्वंय कहा भी कि विकास की अंधी दौड़ में हमने प्रकृति, जीव, जन्तु, सब कुछ दांव पर लगा दिये, अपनी जरूरतों को कई गुना बढाने के चक्कर में लगे लोग अपने किये को देखेंगे और कहेंगे ये हमने क्या किया?

क्योंकि धरती (प्रकृति) के पास सभी की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, किंतु किसी के लालच के लिए नहीं। हम यह कह सकते हैं कि गाँधी दर्शन हर संकट में मार्गदर्शक है, कोई भी महामारी हो या अन्य राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक संकट गाँधी चिन्तन की सदैव प्रासगिकंता सिद्ध होती है। गाँधी जीवन दर्शन में हर समस्या का निदान निहीत है, आवश्यकता है उसे अध्ययन कर निष्पक्ष भाव से अपने जीवन, व्यवहार में अमल करने की।

संदर्भ ग्रन्थ

1. गाँधी मो.क. – *सत्य के प्रयोग* (आत्मकथा), नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, 1993
2. धर्माधिकारी दादा– *लोक नीति विचार,* सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, 1964
3. गाँधी जी, महात्मा – *सर्वोदय,* नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1960
4. वर्मा वी.पी. – *नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त,* अलाईड पब्लिशर्स लिमिटेड, नई दिल्ली, 1982
5. गाँधी महात्मा – *हिन्दू धर्म* पृ0 **203, 217, 219**
6. *गाँधी महात्मा – धर्म* – नीति, पृ0 **233**
7. लाल बी.के. – *समकालीन भारतीय दर्शन,* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1994
8. *गाँधी महात्मा – हिन्दू मुस्लिम यूनिटी,* भारतीय विधा मंदिर, बंबई, 1965
9. मजूमदार धीरेन्द्र – *सर्वोदय समाज की दिशा में, सर्व सेवा संघ,* वाराणासी, 1971

समाचार पत्र

1. राजस्थान पत्रिका, 6 अप्रेल 2020
2. दैनिक भास्कर, 7 अप्रेल 2020, 20 अप्रेल 2020
3. दैनिक भास्कर, 18 अप्रेल 2020
4. हरिजन, 23.01.1930
5. यंग इण्डिया, I 8.6.1935, II 23.10.1924